17 नवम्बर 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महावीर निर्वाणोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान महावीर निर्वाणोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: 7 बजे से भगवान महावीर पूजन के उपरान्त 8 बजे पंचतीर्थ जिनालय एवं 8.15 बजे सीमंधर जिनालय में निर्वाण फल समर्पित किया गया। तदुपरान्त प्रात: 8.30 बजे से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा भगवान महावीर निर्वाणोत्सव पर विशेष प्रवचन का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। इसके बाद गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन हुआ।

(2) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर के तत्त्वावधान में दिनांक 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक पंचकल्याणक विधान संपन्न हुआ।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल व ब्र. अमृतभाई देवलाली द्वारा संपन्न हुये।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के 204-206 कलश व 345-348 तक की गाथाओं पर अत्यंत प्रभावशाली प्रवचन हुये।

इसके अतिरिक्त ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा नियमसार पर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा अष्टपाहुड पर प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगभग 800 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

(3) दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में दिनांक 16 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक पण्डित गुलाबचंदजी बीना द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही दिनांक 3 व 4 नवम्बर को भगवान महावीरस्वामी का 2540वाँ निर्वाण महोत्सव उत्साहपूर्वक **(शेष पृष्ठ 8 पर ...)**

डॉ. भारिल्ल के कार्यक्रम

अब डॉक्टर भारिल्ल अधिकांश जयपुर में ही रहेंगे। उनके प्रवचन प्रतिदिन शाम को लगभग आठ बजे से होंगे; जिन्हें लाइव www.ustream.tv/channel/ptst पर प्रसारित किया जायेगा। आप सभी स्मारक भवन में पधारकर या घर बैठे इन्टरनेट पर अवश्य सुनें। प्रातःकाल : जी-जागरण चेनल पर 6.30 से 7 बजे तक भी उन्हें सुना जा सकता है।

- व्यवस्थापक : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 10 से 17 नवम्बर 2013 तक **श्री सुरेशचन्द अजीतकुमार वैभवकुमार तोतूका परिवार, जयपुर** की ओर से आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान बहुत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की गाथा 349 से 365 तक एवं रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त रात्रि में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा नयचक्र (ज्ञाननय, शब्दनय, अर्थनय) पर कक्षाओं का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन किया गया।

विधान के अवसर पर बीच-बीच में अनेक छंदों का अर्थ पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा समझाया गया। कार्यक्रम में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों सहित लगभग 350-400 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधान के अंतिम दिन मंगल कलश भव्य शोभायात्रापूर्वक विधानकर्त्ता परिवार के घर पर ले जाया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर व पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के सहयोग से संपन्न कराये। कार्यक्रम का निर्देशन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

मोना द्वारा विद्वत्गोष्ठी संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में दिनांक 5 से 9 नवम्बर तक मोना **(MONA-Mumukshu of North America)** द्वारा एक विद्वत्गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी का उद्घाटन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा हुआ। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा गोष्ठी में रखे गये आज के विषय क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन का लाभ सभी को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, श्री चेतनभाई राजकोट, श्री भरतभाई शेठ राजकोट द्वारा कारणशुद्धपर्याय, स्वपरप्रकाशक स्वभाव, दृष्टि का विषय, षट्कारक आदि विषयों पर व्याख्यानों एवं तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

कार्यक्रम में देश-विदेश के लगभग 300 साधर्मियों ने लाभ लिया।

सम्पादकीय -

पूर्वाग्रह के झाड़ की जड़ें गहरी नहीं होतीं

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

बुन्देलखण्ड की प्रसिद्ध कहावत है, प्रचलित लोकोक्ति है कि-

जैसे जिसके नाले-नदियाँ, वैसे उनके भरका।[१]
जैसे जिनके बाप-महतारी, वैसे उनके लरका।।[२]

माता-पिता के संस्कार सन्तानों पर पड़ते हैं, इस बात का ज्ञान कराने वाली उक्त कहावत में कहा गया है कि - ''जैसे छोटे-बड़े गहरे-उथले नाले-नदियाँ होतीं हैं, उनके गढ्ढे भी वैसे ही छोटे-बड़े, गहरे-उथले होते हैं।

ज्योत्स्ना और विराग भी इसके अपवाद नहीं थे। जहाँ - ज्योत्स्ना पर माँ की परछाई पड़ी थी, वहीं विराग पर पिता के व्यक्तित्व की छाप थी। तभी तो विराग ने उच्च शिक्षा के लिए माँ के मना करने पर भी अपना आग्रह चालू रखा था। अन्त में माँ को ही मुड़ना पड़ा। माँ ने वस्तु-स्वातंत्र्य के सिद्धान्त की शरण में जाकर और बेटे की होनहार का विचार कर एवं अपनी छाती पर धैर्य की शिला धरकर उसे इस विश्वास के साथ परदेश जाने की अनुमति दी थी कि एक दिन विराग अवश्य वापिस आयेगा।

बाद में जिसतरह जीवन के उत्तरार्द्ध में जीवराज को सद्बुद्धि आ गई और उसका मानवजीवन सार्थक हो गया। उसी तरह विराग भी विदेश से वापिस आ गया।

जीवराज के लकवा की बीमारी से ग्रस्त हो जाने से माँ समता के ऊपर अपनी बेटी ज्योत्स्ना के जीवन को संभालने, उसे पढ़ाने और योग्य वर तथा धार्मिक घर तलाशने की जिम्मेदारी विशेष बढ़ गई थी।

श्रद्धा में वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त का अटूट विश्वास होने पर भी जब तक गृहस्थ जीवन में अपनी संतान के प्रति राग है, तबतक उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के विकल्प नहीं छूटते।

माँ समता की यह भावना थी कि ज्योत्स्ना को ऐसा वर और घर मिले कि जिससे उसके पारिवारिक जीवन का निर्वाह भी शांतिपूर्वक हो और परलोक भी न बिगड़े। सौभाग्य से ऐसा ही बनाव बन गया। ज्योत्स्ना को बुद्धिमान, स्वस्थ, सुन्दर और तेजस्वी गणतंत्र जैसा वर और एकदम खुले विचारों वाला घर-परिवार मिल गया था। इसकारण माँ आश्वस्त हो गई थी कि अब ज्योत्स्ना के दोनों लोक सुधर जायेंगे; परन्तु सगाई हो जाने के बाद समता की एक सहेली ममता ने बिना माँगे मुफ्त में यह सलाह दे डाली थी। उसने कहा - ''और तो सब ठीक है, परन्तु आजकल सासें बहुत बदनाम हैं, लड़के का स्वभाव भी तेज है। जरा सोच-समझकर कदम उठाना।''

समता ने सोचा - ''जो माँ, बेटे के गोद में आते ही घर में बहू बुलाने के सपने सजोने लगती हो, ज्यों-ज्यों बेटा बड़ा होता है, त्यों-त्यों उन स्वप्नों को साकार करने के लिए उत्सुक होने लगती हो। निरन्तर प्रतीक्षारत रहती हो, और जिसने पलक पाँवड़े बिछाकर बहू का स्वागत किया हो; भला वह सासू माँ उसी बहू से बुरा व्यवहार कैसे कर सकती है? और आखिर वह ऐसा काम करेगी ही क्यों; जिससे स्वयं बदनाम हो और पूरा परिवार दुःखी हो? और लड़के को तो तेजस्वी होना ही चाहिए।''

समता आगे सोचती है -''सहेली की सलाह में ही कहीं कुछ दाल में काला है। कुछ औरतों की आदत भी इधर की उधर, उधर की इधर करने की होती है। ये ममता भी भिड़ाने में कम नहीं है।

बहू को घर में लाने के पहले सासें ही तो पसंद करती हैं। फिर भी न जाने क्यों? लोक में सासों पर ही बुरे व्यवहार का आरोप लगाया जाता है? उन्हीं को बदनाम क्यों किया जाता है खेर! जो भी हो।''

यह सोचकर समता पहले से ही इस बात से सजग रही कि कहीं ''ऐसी ही कोई घटना ज्योत्स्ना के साथ न घट जाय अन्यथा उस सहेली की बात सच हो जायेगी और उसे कहने का मौका मिल जायेगा तथा मेरे हाथ केवल पछतावा रह जायेगा। अतः शादी के पहले सही-सही पता तो एक बार लगाना ही होगा।''

गहराई से शोध-खोज करने पर, समता को पता चला कि ''प्रायः होता यह है कि - लड़कियों की शादी के पूर्व उनकी सखी-सहेलियाँ, भाभियाँ और बड़ी बहिनें आदि जो उन अविवाहित लड़कियों की मौज-मस्ती से, नाज-नखरों से तथा घरेलू कामों में हाथ न बटाने से परेशान रहतीं हैं, वे समय-समय पर हंसी-मजाक में अपनी प्रतिक्रिया प्रगट करते हुए कह दिया करतीं हैं कि 'बहना! और कुछ दिन मौज-मस्ती करलो, अपनी नींद सो लो और अपनी नींद जागलो; फिर सुसराल में तो सबके सो जाने पर ही सो सकोगी और सबसे पहले जागना पड़ेगा। और जब चक्की, चौका-चूल्हे का काम भी तुझे ही चुप-चाप रहकर करना पड़ेगा, तब नानी याद आयेगी।

भूल जाओगी राग-रंग, अर भूल जाओगी छकड़ी।[१]
बात-बात में डाँट पड़ेगी सासू माँ की तगड़ी।।''

यदि मुँह खोला, कुछ कहा-सुना और नाक-भौं सिकोड़ी तो पतिदेव द्वारा लात-घूँसा से पूजा भी हो सकती है; क्योंकि पत्नियों का पतियों से पिटना तो भारतीय परम्परा रही है।''

समता विचारों में डूबी यह सब सोच ही रही थी कि - ज्योत्स्ना की भाभी बीच में ही बोली - ''और हाँ, सुन ज्योत्स्ना !

१. गढ्ढे २. संतानें

तेरी ससुराल में मैं तो तेरे साथ जाऊँगी नहीं, जो अभी बिस्तर पर ही गर्म-गर्म चाय और बिस्कुट लाकर देती हूँ। इसलिए - कम से कम चाय बनाना सीख ही ले।''

यह सब देख/सुनकर समता इस निष्कर्ष पर पहुँची कि - ''सुसराल के बारे में ऐसे कमेन्ट्स सुनते-सुनते लड़कियाँ ससुराल पक्ष से आतंकित होकर पूर्वाग्रहों में पलती हैं और तनावग्रस्त हो जाती हैं। धीरे-धीरे उन पूर्वाग्रहों से प्रभावित होकर वे मुखर हो जाती है। उनका मानस ऐसा बन जाता है कि मानो वे सुसराल नहीं, बल्कि किसी युद्धस्थल की सीमा रेखा पर जा रहीं हों।''

ससुराल पहुँचते ही मैं-मैं, तू-तू से बात प्रारंभ होती और बात-बात में वाक्युद्ध प्रारंभ होने लगता।

इस मैं-मैं, तू-तू के संदर्भ में यदि बहुएँ आत्मनिरीक्षण करें, और सासू माँ के उन संजोये स्वप्नों का सर्वेक्षण करें, जो सासू माँ ने बहू के शुभागमन के पूर्व संजोये थे तथा उस दृश्य को याद करें, जब उसने पलक पाँवड़े बिछाकर बहू का स्वागत किया था तो कभी ऐसी मैं-मैं, तू-तू की समस्या ही नहीं आयेगी।

समता आश्वस्त हो गई कि ''इसमें सासों का कोई दोष नहीं है, बेटियाँ और बहुएँ भी अधिक दोषी नहीं है। यह तो घर के आंगन में रोपा गया कंटीला झाड़ है, जिसे आसानी से उखाड़ा जा सकता है। इस पूर्वाग्रहरूप झाड़ की **जड़ें जमीन में गहरी नहीं, पत्थर पर हैं,** अतः चिन्ता की कोई बात नहीं हैं। मैं ज्योति में इस हठाग्रह के अंकुर को पनपने ही नहीं दूँगी, उसके दिल से निकाल दूँगी।

माँ समता सोचती है - ''गणतंत्र के माता-पिता पूर्व परिचित ज्योत्स्ना जैसी सुशील भोली-भाली बुद्धिमान बहु को पाकर अपने जीवन को धन्य मान रहे हैं, परन्तु प्रारंभ में एक-दूसरे की भावनाओं को न समझ पाने से कभी-कभी सास-बहू के विचारों में मतभेद भी खड़े होना अस्वाभाविक नहीं हैं। यद्यपि सास और बहू - दोनों के हृदय साफ होते हैं, परन्तु विचार भेद तो हो ही सकते हैं। जो सोचते हैं, विचारते हैं, उन्हीं के विचारों में ही तो कभी किसी बात में सहमति तो कभी किसी बात में असहमति भी होती है। जिनके मति होती है, उन्हीं के तो सहमति और असहमति होती है। अतः यह कोई बुरा लक्षण नहीं है। विचार मन्थन में यह जरूरी भी है, मन्थन से ही तो मक्खन निकलता है न! अन्यथा सही और अच्छे निष्कर्ष ही नहीं निकलेंगे। हाँ, बातों-बातों में अशान्ति और मन मुटाव नहीं होना चाहिए।''

माँ समता ज्योत्स्ना बेटी को समझाती है - ''बहुएँ या सासें कोई कठपुतलियाँ तो नहीं; जो दूसरों की उंगलियों के इशारे से नाचतीं हैं। सबकी अपनी-अपनी इच्छायें होती हैं, अपने-अपने विचार होते हैं, उन्हें सुनें-समझें; फिर एकमत हों तो ठीक; अन्यथा कोई बात नहीं। जो जिसे जँचे करने दो; सब अपने-अपने मन के मर्जी के मालिक हैं, राजा हैं, उन्हें मर्जी का मालिक और मन का राजा ही रहने दें।

वस्तुस्वातंत्र्य के महामंत्र का स्मरण करके कोई किसी के काम में हस्तक्षेप न करें। **न स्वयं अपने मन को मारे और न दूसरों के मन को मरोड़े।** यही सुख-शान्ति से रहने का महामंत्र है। अतः वस्तुस्वातंत्र्य का महामंत्र जपो और आकुलता से बचो। यही संतों का उपदेश है, आदेश है।'' - यह सब समता ने ज्योति को समझाया।

ज्योत्स्ना ने कहा - ''माँ ! तुम्हारा वस्तु स्वातंत्र्य का मंत्र वास्तव में सब मंत्रों में श्रेष्ठ है। समस्त विषय-विकार का विष नष्ट करने में समर्थ हैं, परन्तु इसे कैसे जपें? इसकी विधि बताओ न !''

माँ ने कहा - ''हाँ सुनो ! वस्तुस्वातंत्र्य सिद्धान्त को समझने/समझाने के लिए पहले यह जाने कि - स्वतंत्रता के तीन रूप होते हैं। (१) अस्तित्वात्मक स्वतंत्रता (२) क्रियात्मक स्वतंत्रता (३) ज्ञानात्मक स्वतंत्रता। इनमें प्रथम व द्वितीय स्वतंत्रता तो सभी वस्तुओं में अनादि से है ही; क्योंकि प्रत्येक द्रव्य-गुण-पर्यायरूप वस्तुओं का अस्तित्व और उनमें होने वाला क्रियारूप स्वभाव-परिणमन तो अनादि से स्वाधीनतापूर्वक हो ही रहा है; किन्तु ज्ञानात्मक स्वतंत्रता अज्ञानी जीवों को नहीं है अर्थात् अज्ञानी को अपने स्वतंत्र अस्तित्व और क्रिया की स्वाधीनता का ज्ञान नहीं है।

अज्ञानी जीव वस्तुस्वातंत्र्य के ज्ञान से अनभिज्ञ होने से अपनी सुख-शान्ति को देहाधीन, कर्माधीन और सुखद संयोगों की अनुकूलता में खोजता है। इसकारण स्वतंत्र होते हुए भी ज्ञानात्मक स्वतंत्रता नहीं है। किसी ने कहा भी है -

सबके पल्ले लाल, लाल बिना कोई नहीं।
यातें भयो कंगाल, गाँठ खोल देखी नहीं।।

यह कहावत तब की है जब लोग बहुमूल्य हीरे जवाहरातों को धोती के पल्ले में गाँठ लगाकर बाँधकर रखते थे। उस बात को कवि ने उक्त दोहे में कहा है कि - सबके पल्ले में बहुमूल्य लाल बंधे हैं, अर्थात् सभी लखपति हैं, परन्तु उन्होंने अपने पल्ले की गाँठ खोल कर ही नहीं देखी, यही उनकी कंगाली का कारण है।

हीरों से भी अधिक अमूल्य, पूर्ण स्वतंत्र, स्वावलम्बी, स्वसंचालित एवं स्वयं सुख स्वभावी होते हुए स्वयं को नहीं जाना, अपने को नहीं खोजा, देहादि में ही अपने अस्तित्व को मानता-जानता रहा है। जहाँ सुख नहीं वहाँ सुख ढूँढ़ा, जहाँ हीरे नहीं, वहाँ हीरे खोजे।''

माँ समता श्री ने आगे कहा - ''इस तरह अज्ञानी जन अपने उस मौलिक स्वरूप से अपरिचित हैं, अनभिज्ञ हैं, इस कारण जो स्वाभाविक कार्य-कारण व्यवस्था है, सहज निमित्त-नैमित्तिक

---

१. उछलकूद

सम्बन्ध हैं, उन्हें वैसा न मानकर उनमें अपना एकत्व एवं कर्तृत्व मानते रहे हैं। और बिना वजह हर्ष–विषाद करते हैं, सुखी–दुःखी होते हैं और राग–द्वेष में पड़कर अपना संसार बढ़ाते हैं। उन्हें अपने ज्ञान में उस स्वतंत्रता का पता नहीं होने से स्वयं पराधीन हो रहे हैं – ऐसी स्वतंत्रता के एक नहीं अनेक उदाहरण पुराणों में और लोक में भी भरे पड़े हैं।

कहा जाता है कि तोता पकड़ने वाले अपने ही आंगन में एक नलनी पिरोई रस्सी बाँधते हैं, रस्सी के नीचे खाने का दाना भी रख देते है, तोता आता है, नलनी पर बैठता है, उसके बैठते ही नलनी घूमती है तोता औंधा लटक जाता है, वह घबराहट में अपने उड़ने की चाल भूल जाता है और बहेलिये द्वारा पकड़ लिया जाता है। इसी तरह यह जीव अपनी स्वतंत्रता की चाल भूला हुआ है। कहा भी है–

''अपनी सुध भूल आप, आप दुःख उपायो।
ज्यों शुक नभ चाल विसरि नलनी लटकायो।।

इस तरह ज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अभाव में जीव दुःखी हैं।

इसी संदर्भ में एक उदाहरण रेगिस्तानी ऊँटों का है – सौ ऊँटों का काफिला लिए रेबारी (काफिले का मालिक) शहर की ओर जा रहा था। रेबारी के पास रास्ते में पड़ाव पर ऊँटों को बाँधने के लिए १०० खूँटी व रस्सियाँ थीं।'' रास्ते में एक खूँटी व रस्सी खो गई। ९९ रस्सियों से ९९ ऊँट तो पड़ाव पर बाँध दिये, किन्तु १००वें ऊँट को बाँधने की समस्या थी। रेबारी को उपाय सूझा और उसने उस ऊँट के पास जाकर ठक–ठक की आवाज की और उसके गले में हाथ फेरकर उसे बँधने का भ्रम पैदा कर दिया। वह ऊँट अपने को बँधा मानकर बैठ गया। सवेरे ९९ ऊँट खोल दिए और वे चल भी दिये; परन्तु वह सौवाँ ऊँट उठा ही नहीं। उसे भ्रम था कि मैं तो बँधा हूँ, क्योंकि मालिक ने खोला ही नहीं था, मालिक भी समझ गया कि मैंने बेचारे को खोला ही नहीं तो यह उठेगा कैसे? वह ऊँट के पास गया और जैसे बाँधने की क्रिया की थी, वैसे ही खोलने की प्रक्रिया की तो ऊँट तुरंत उठा और चल दिया।''

माँ के इस मार्मिक संदेश को सुनकर ज्योत्स्ना बहुत प्रसन्न हुई। बचपन में सखी–सहेलियों और भाभियों द्वारा की गई भ्रमोत्पादक बातों से उसके मन में सास, पति और ससुरालवालों के प्रति पूर्वाग्रह से जो भ्रम उत्पन्न हो गया था, वह माँ के द्वारा वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को समझाने से तथा ससुराल पक्ष की मनोवैज्ञानिक विचाराधारा का ज्ञान कराने से समाप्त हो गया; क्योंकि भ्रम रूप झाड़ की जड़ें तो पत्थर पर ही होती हैं न।

इसी तरह जबतक संसारी जीव स्वतंत्र होते हुए भी अपनी मान्यता में स्वयं को बंधन रूप मानेगा तब तक मुक्त नहीं हो सकता। अतः हम वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त के द्वारा अपनी स्वतंत्रता का ज्ञान करें और सुखी हों। ●

ऑनलाइन व्याख्यान

दिनांक 9 नवम्बर को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा महावीर निर्वाणोत्सव विषय पर मोना **(MONA-Mumukshu of North America)** के तत्त्वावधान में अमेरिका व कनाडा के साधर्मियों हेतु प्रासंगिक मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि कॉन्फ्रेन्स पर आपके प्रवचन विगत 3 वर्षों से चल रहे हैं, जिसमें गुणस्थान विवेचन की पूर्णता के उपरान्त वर्तमान में तत्त्वार्थ राजवार्तिक एवं इष्टोपदेश पर प्रवचन किये जा रहे हैं।

वार्डन की आवश्यकता

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा सोनगढ (गुज.) में संचालित विद्यालय में विद्यार्थियों की देखभाल एवं शिक्षण कार्य हेतु एक योग्य वार्डन की आवश्यकता है। 30 वर्ष से अधिक उम्र वालों को प्राथमिकता, वेतन–योग्यतानुसार।

संपर्क करें – मंत्री, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, 302, कृष्ण कुंज, प्लाट नं. 30, नवयुग सी.एच.एस. लिमिटेड, बी.एल. मेहता मार्ग, विले पार्ले (वेस्ट), मुम्बई–400056 फोन – 022–26130820

आमंत्रण पत्रिका विमोचन संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ जैन नगर में आगामी दिनांक 21 से 28 नवम्बर तक लगने वाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं 170 तीर्थंकर महामंडल विधान की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन दिनांक 6 नवम्बर को अतिशय क्षेत्र श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर प्रांगण में किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रकुमार जैन रेमजा वालों ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सेठ महावीर प्रसादजी (अध्यक्ष– सेठ छदामी लाल जैन ट्रस्ट) एवं विशिष्ट अतिथि श्री जितेन्द्रकुमारजी 'मुन्नाबाबू' व पण्डित विमलकुमारजी जलेसर उपस्थित थे। आमंत्रण पत्रिका का विमोचन डॉ. अरिन्जयजी जैन आगरा पुत्र डॉ. अरविन्दकुमारजी करहल के करकमलों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे स्थानीय विद्वान प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी ने शिविर की उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहा कि ''वर्तमान समय में आध्यात्मिक शिविरों की बाढ आने का श्रेय कानजीस्वामी को है एवं वर्तमान में विद्वानों को तैयार करने का जो कार्य पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है, वह बहुत प्रशंसनीय है।''

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती इन्द्राणी जैन ने एवं संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

इसलिए भी आप भारिल्ल[1] हैं

आदरणीय दादा
आपने 'समयसार का सार' में
आठ कर्मों में से
मात्र मोहनीय कर्म को ही
बंध का कारण बताकर
शेष सात कर्मों को
अकार्यकारी कहकर
हम पर कर्मों का जो अपार भार था
उसे आपने उतारा
हम घाति-अघाति कर्मों का
भार दिन-रात ढो रहे थे
इसे आपने यह कहकर उतारा
कि अघाति कर्म
आत्मा के स्वभाव का घात नहीं करते
इससे हमें आपने हवा जैसा निर्भार (हल्का) कर दिया
आप सचमुच में भारिल्ल हैं।
कर्मों की आठ मूल प्रकृतियाँ,
फिर उनकी एक सौ अड़तालीस उत्तर प्रकृतियाँ
- ऐसा प्रकृति बंध
आत्मा के प्रदेश के साथ उनका एकमेक होना
- ऐसा प्रदेश बंध
उनके फल देने की शक्ति
- ऐसा अनुभाग बंध
सत्ता में पड़े कर्म
फल देने में असमर्थ हैं
- ऐसा स्थिति बंध
उदय में आने पर भी
ज्ञानी उनका फल अनासक्त भोगता हुआ भी
अभोक्ता है / कर्म कर्म में हैं, मुझमें नहीं
- यह बताकर आपने
चुटकी भर में कर्म का भार उतार दिया
इसलिए आप भारिल्ल हैं।
हमें राग से विमुख कर
स्वभाव सन्मुख कर दिया
हमारे मिथ्या कर्तृत्व भार को उतार दिया
इसलिए भी आप भारिल्ल हैं।
गुरुदेव के बाद एक अकेले आपने ही
हम पर चढा कर्तृत्व का भार उतारा
(भूत छुड़ाया)
ज्ञायक ज्ञायक है, कर्त्ता नहीं
कर्त्ता कर्त्ता है, ज्ञायक नहीं
आत्मा पर का कर्त्ता तो दूर
ज्ञायक भी नहीं,
आत्मा और पर के बीच
कर्त्ता-कर्म का संबंध तो दूर
ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध भी नहीं
आत्मा अपने ज्ञानस्वभाव का ज्ञाता है
अपने ज्ञानस्वभाव में
पर स्वत: ज्ञात होता है
इसलिए उपचार से ही आत्मा उनका ज्ञाता है
दरअसल ज्ञाता-ज्ञेय संबंध
कोई संबंध नहीं
- यह कहकर आपने पर कर्तृत्व का ही नहीं
पर, पर ज्ञातृत्व का भी भार उतारा
इसलिए भी आप भारिल्ल हैं। **- बाहुबली भोसगे**

1. कन्नड में भारिल्ल शब्द का अर्थ **'भार उतार दिया'** होता है। यह कविता इसी अर्थ को ध्यान में रखकर बनाई गई है।

शोक समाचार

(1) पीसांगन-अजमेर (राज.) निवासी श्री छीतरमलजी बाकलीवाल का दिनांक 9 नवम्बर को समाधिमरण पूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप जयपुर शिविर के शिरोमणि संरक्षक थे। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में उनका भरपूर सहयोग रहता था। शिविरों एवं अन्य कार्यक्रमों में वे सदैव उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। आपकी स्मृति में संस्था को 11 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई।

(2) पथरिया-दमोह (म.प्र.) निवासी डॉ. भागचन्दजी जैन का दिनांक 15 सितम्बर 2013 को 86 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी एवं प्रवचनकार थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1500/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अतीन्द्रिय अनंत सुख को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

पंचकल्याणक में पधारने हेतु आमंत्रण

श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, जबेरा द्वारा नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर के **दिनांक 14 से 19 दिसम्बर 2013 तक** होने जा रहे श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी साधर्मी भाई-बहिन सादर आमंत्रित हैं। आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें। **संपर्क सूत्र -** पण्डित कमल मलैया (कार्याध्यक्ष) 8878730884, पण्डित विनोद सिंघई (महामंत्री) 9424462669, पण्डित सुरेन्द्र मलैया (संयोजक) 9425629043

सिद्धभक्ति

9 तृतीय पूजन

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यहाँ सिद्ध भगवान को अनन्त गुणों का भवन बताया है। भक्तामर भक्तिकाव्य में कहा गया है -

(वसंततिलका)

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।२७।।

हे आदिनाथ भगवन् ! इसमें क्या आश्चर्य है कि आपमें सम्पूर्ण गुणों ने निरवकाशरूप से आश्रय लिया है। वे गुण आपमें ठसाठस भर गये हैं, रंचमात्र भी अवकाश नहीं रहने दिया और एक भी दोष आपके पास नहीं आये; क्योंकि उन्हें आश्रय देनेवाले तो गली-गली में बैठे हैं और वे लोग दोषों को सम्मानपूर्वक आश्रय देते हैं। इसलिए उन्हें अभिमान हो गया। वे बिना बुलाये कहीं भी जाने को तैयार नहीं थे। इसलिए वे दोष स्वप्न में भी आपके पास नहीं आये। हाँ, गुणों को पूछनेवाला कोई नहीं था, सो वे आपमें ही समा गये।

तात्पर्य यह है कि आपमें गुण तो अनन्तों हैं; पर दोष एक भी नहीं।

आगामी सातवाँ छन्द इसप्रकार है -

(कामिनी मोहन)

कोटिथित क्लेश को मेटि शिवकर रहो,
उपल की नकल हो अचल इक थल रहो।
स्वप्न में हू न निज अर्थ को पावहीं,
जे महा खल न तुम ध्यान धरि ध्यावहीं।।७।।

हे सिद्ध भगवन् ! करोड़ों वर्ष से स्थित करोड़ों क्लेशों को मेंटकर कल्याण करनेवाले एकमात्र आप ही हो। आप पत्थर के समान एक स्थल पर रहनेवाले हो, आप पत्थर की हुबहू नकल हो; क्योंकि जिसप्रकार पत्थर एक स्थान पर पड़ा रहता है; उसीप्रकार आप भी एक स्थान पर ही अनंतकाल तक एक ही स्थिति में रहते हो, आपकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं होता, वैसे के वैसे ही विराजमान रहते हो।

जो महादुष्ट लोग तुम्हारा ध्यान नहीं करते; वे लोग स्वप्न में भी अपने भगवान आत्मा की प्राप्ति नहीं कर पाते। अपने आत्मा की प्राप्ति उन्हीं लोगों को होती है; जो आपका ध्यान धरते हैं।

देखो, यहाँ भगवान की उपमा पत्थर से दे रहे हैं अथवा भगवान को पत्थर कहा जा रहा है। कहाँ पत्थर एकदम तुच्छ नाचीज और कहाँ आप अनन्त गुणों के अखण्ड पिण्ड, आनन्द के रसकन्द, ज्ञान के घनपिण्ड, गुणों के गोदाम और अनंत शक्तियों के संग्रहालय। आप और पत्थर में क्या तुलना हो सकती है?

अरे, भाई! यहाँ सिद्ध भगवान की उपमा पत्थर से नहीं दी जा रही है। यहाँ पत्थर की एक स्थान पर पड़े रहनेरूप अचलता से सिद्ध भगवान की अचलता की उपमा दी गई है।

यहाँ मात्र अचलता की ही तुलना करनी, सर्वांगता की नहीं।

आगामी आठवाँ छन्द इसप्रकार है -

(कामिनी मोहन)

आपके जाप बिन पाप सब भेंटही,
पाप की ताप को पाप कब मेंटही।
'संत' निज दास की आस पूरी करो,
जगत से काढ़ निजचरण में ले धरो।।८।।

हे भगवन् ! आपका जाप किये बिना सभी पापों से भेंट होती है; क्योंकि बताओ इस जगत में पाप के कारण जो ताप-संताप पैदा होता है, वह संताप पाप करने से कैसे मिट सकता है ?

तात्पर्य यह है कि जिसप्रकार खून से लगा धब्बा खून से ही धोने से कपड़ा साफ नहीं हो सकता; उसीप्रकार एक पाप करने से जो संताप पैदा होता है, दूसरा पाप करने से वह संताप कैसे मिट सकता है?

जगत में प्राय: देखा जाता है कि पाप के उदय से मिली गरीबी, दरिद्रताओं को दूर करने के लिए हम चोरी आदि पाप करने लगते हैं। इस बात का विचार ही नहीं करते कि पाप से प्राप्त दरिद्रता का नाश पाप करने से कैसे मिट सकता है?

पाप के उदय से प्राप्त होनेवाली दरिद्रता तो हे भगवान आपके जाप से मिट सकती है।

अन्त में कवि संतलालजी कहते हैं कि हे भगवान ! मैं आपका दास हूँ। आप अपने इस दास की आशा को अवश्य पूरी करना।

मेरी आशा मात्र इतनी ही है कि मैं इस संसार से ऊब गया हूँ और अब आपके चरणों में आना चाहता हूँ। अत: हे भगवन् ! आप मुझे इस संसार सागर से निकाल कर अपने चरणों में ले लो।

इसके बाद कविराज संत अन्त में एक घत्ता नामक छन्द लिखते हैं; जो इस जयमाला का अन्तिम छन्द है।

उक्त नौवाँ छन्द मूलत: इसप्रकार है -

(घत्ता)

जय अमल अनूपं, शुद्ध स्वरूपं, निखिल निरूपं धर्मधरा।
जय विघन नशायक, मंगलदायक, तिहुँ जगनायक परमपरा।।९।।

हे भगवन् ! आप सभी प्रकार के मोह-राग-द्वेषरूप मैलों से रहित हो, अमल हो और आपकी उपमा जगत के किसी भी पदार्थ से नहीं दी सकती है, इससे आप अनुपम हो। आपका स्वरूप शुद्ध है; क्योंकि आप सभी प्रकार के पुण्य-पाप से भी दूर हैं। धर्म की पृष्ठभूमि में जो कुछ आता है; उक्त सम्पूर्ण वस्तुस्वरूप आपने निरूपित किया है, दिव्यध्वनि के माध्यम से जगत के सामने प्रस्तुत किया है; अत: आपकी जय हो, जय हो।

हे भगवन् ! आप सम्पूर्ण विघ्नों के विनाशक हो, मंगल देनेवाले हो, सभी का भला करनेवाले हो और यदि हम परम्परा से कहें, व्यवहारनय से कहें तो आप तीन लोक के नायक हो।

निश्चयनय से तो आप सबकुछ छोड़ चुके हो; क्योंकि आप यह बहुत अच्छी तरह जानते हो कि इस जगत में मेरा कुछ भी नहीं है; क्योंकि कोई किसी का कुछ होता ही नहीं है; फिर भी परम्परा से यह कहा जाता रहा है कि आप तीन लोक के नाथ हो। इसलिए मैं भी कहता हूँ कि आप तीन लोक के नाथ हो।

वस्तुत: निश्चयनय से तो कोई किसी का नाथ होता ही नहीं है।

चतुर्थ पूजन

चौथी पूजन की जयमाला के आरंभ में एक दोहा है; जो इसप्रकार है-

(दोहा)

तीर्थंकर त्रिभुवन धनी, जापद करत प्रणाम।
हम किह मुख वर्णन करैं, तिन महिमा अभिराम।।१।।

तीन लोक के मालिक तीर्थंकर भी दीक्षा लेते समय जिसके चरणों में प्रणाम करते हैं, नमस्कार करते हैं; उन सिद्ध भगवन्तों की अभिराम महिमा का गुणगान हम किस मुख से कर सकते हैं।

तात्पर्य यह है कि सर्वोत्कृष्ट महान सिद्ध भगवन्तों की महिमा का वर्णन हम साधारण बुद्धि के धारक तुच्छ मनुष्य कैसे कर सकते हैं ?

कहा जाता है कि तीर्थंकर अपनी गृहस्थ अवस्था में भी सिद्धों के अतिरिक्त किसी को भी नमस्कार नहीं करते और न किसी को धर्मोपदेश देते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि जब वे दीक्षा लेते हैं तो **नम: सिद्धेभ्य: –** सिद्धों को नमस्कार हो – मात्र इतना ही कहते हैं; ॐ नम: सिद्धेभ्य: नहीं कहते; क्योंकि ॐ में पंचपरमेष्ठी आ जाते हैं।

वे मात्र सिद्ध परमेष्ठी को ही नमस्कार करते हैं।

तीर्थंकर गृहस्थ अवस्था में भी पूर्णता के अभिलाषी होते हैं; यही कारण है कि वे पूर्णता को प्राप्त सिद्धों को ही नमस्कार करते हैं; क्योंकि **पूर्णता के लक्ष्य से ही पूर्णता की प्राप्ति होती है।**

इसी बात को ध्यान में रखकर यहाँ यह बात कही गई है कि तीर्थंकर भी जिनके चरणों में प्रणाम करते हैं, उन सिद्ध परमात्मा की महिमा का वर्णन हम किस मुँह से कर सकते हैं ?

सिद्धदशा आत्मा की पूर्ण विकसित अवस्था है। एक आत्मा के विकास में जितना जो कुछ करना होता है या होना होता है; वह सब सिद्ध अवस्था में हो चुका है।

यद्यपि अरहंत अवस्था महान है; क्योंकि दिव्यध्वनि का लाभ तो उस अवस्था में ही प्राप्त होता है; तथापि वह अरहंत अवस्था सिद्ध अवस्था के समान पूर्ण विकसित अवस्था नहीं है। अभी उसमें बहुत कुछ होना बाकी है।

णमोकार महामंत्र में उन्हें प्रथम स्थान मात्र इसलिए दे दिया गया है कि उनसे हमें धर्मलाभ मिलता है, उनकी दिव्यध्वनि के माध्यम से धर्म प्रचार होता है। सभी भव्यजीवों को आत्मकल्याण करने का अवसर प्राप्त होता है।

भले ही हमने उन्हें अपना सीधा उपकारी जानकर णमोकार मंत्र में प्रथम स्थान पर रख दिया हो, पर सिद्ध अवस्था की तुलना में वे द्वितीय स्थान पर ही रहेंगे; क्योंकि अभी उनके चार अघातिया कर्म विद्यमान हैं। उनके शरीरादि का संयोग भी है। वे सिद्धों के समान अचल भी नहीं हैं।

इसप्रकार यह सुनिश्चित है कि आत्मा के विकास की सर्वोत्कृष्ट अवस्था सिद्धदशा ही है।

प्रश्न : यदि आप बुरा न माने तो मैं एक प्रश्न पूछूँ।

उत्तर : हम क्यों बुरा मानेंगे ? आप तो निशंक होकर पूछिए। यदि हमें आता होगा तो उत्तर दे देंगे; अन्यथा क्षमा याचना कर लेंगे।

प्रश्न : यह तो ठीक ही है; क्योंकि आप उत्तर देने के लिए बाध्य तो हैं नहीं। हाँ, तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस सिद्धचक्र विधान में श्रीपाल-मैनासुन्दरी की चर्चा तो कहीं आई ही नहीं। ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर : अरे, भाई ! यह सिद्धचक्र पूजन विधान है; अत: इसमें सिद्धों की ही चर्चा मुख्य रूप से की गई है; तथापि **निकट भविष्य में मोक्ष जाने वाले पंचपरमेष्ठियों को भी इसमें शामिल कर लिया है।**

श्रीपाल-मैना सुन्दरी में से कोई भी परमेष्ठी नहीं थे; अत: उन्हें शामिल करना संभव नहीं था। **(क्रमश:)**

17 नवम्बर 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

पंच परमेष्ठी विधान संपन्न

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ दिनांक 2 से 6 नवम्बर तक श्री कीर्तिभाई चिमनलाल शाह परिवार की ओर से पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् अहमदाबाद के सदस्य पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित ध्रुवेशजी शास्त्री, पण्डित उदयमणीजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री 'स्वानुभव', पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित रीतेशजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित चेतनजी शास्त्री के संयोजन में संपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता, फतेहपुर भी उपस्थित रहे। पण्डित सचिनजी शास्त्री के निर्देशन में श्री पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न कराया गया।

इस अवसर पर दोपहर में पण्डित सोनूजी शास्त्री 'स्वानुभव' द्वारा प्रात: एवं रात्रि में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री द्वारा पंचपरमेष्ठी के स्वरूप से संबंधित विभिन्न विषयों पर विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया।

प्रात: एवं रात्रिकालीन सभा में प्रतिदिन पण्डित उदयमणीजी शास्त्री, पण्डित ध्रुवेशजी शास्त्री, पण्डित रीतेशजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर द्वारा पंच परमेष्ठी के सामान्य स्वरूप एवं प्रयोजन सिद्धि जैसे विषयों पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

चैतन्यधाम प्रमुख अमृतभाई मेहता, श्री अनिलभाई गांधी तलोद, श्री अजितभाई मेहता नवरंगपुरा एवं श्री बीनूभाई शाह मुम्बई ने अहमदाबाद स्नातक परिषद द्वारा आयाजित इस कार्यक्रम की खूब सराहना की।

समग्र कार्यक्रम का कुशल निर्देशन एवं संचालन पण्डित ऋषभजी शास्त्री द्वारा किया गया। सभी प्रवचन एवं कक्षाओं के पश्चात पण्डित नितिनजी शास्त्री ने प्रश्नोत्तरी का संचालन किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

मनाया गया। इस अवसर पर श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित अनिलजी इंजीनियर द्वारा समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(4) सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ तलहटी में स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। पूजन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं कु. विपाशा जैन उदयपुर द्वारा संपन्न कराई गई।

कार्यक्रम में पण्डित राजकुमारजी द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसर पर प्रात: महावीर पंचकल्याणक विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर रात्रि में **'भगवान महावीर और उनके सिद्धांत'** विषय पर गोष्ठी एवं **'महावीर का वैराग्य'** विषय पर नाटिका का आयोजन किया गया। गोष्ठी के प्रमुख वक्ताओं में पण्डित अरुणजी मोदी, पण्डित विपुलजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, कु .अनु शास्त्री आदि शास्त्री विद्वानों तथा ममता, संयम, प्रिंस, शशांक आदि वक्ताओं ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

सभी कार्यक्रमों का संचालन पण्डित निकलेशजी शास्त्री ने किया।

टोडरमल स्मारक का दैनिक कार्यक्रम

प्रात:काल -

5.15 से 6.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का प्रवचन
6.15 से 7.00	पाठ एवं जी-जागरण पर डॉ. भारिल्ल का प्रवचन
7.30 से 8.15	विभिन्न कक्षायें
	(1) नयचक्र - डॉ.संजीवकुमारजी गोधा
	(2) तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 - पण्डित सोनूजी शास्त्री
	(3) वीतराग-विज्ञान पाठमाला - श्रीमती कमला भारिल्ल
8.15 से 9.00	प्रवचन : पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल - प्रवचनसार
9.00 से 9.45	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नमंच

सायंकाल -

6.00 से 6.45	गुणस्थान विवेचन - ब्र. यशपालजी जैन
6.45 से 7.15	जिनेन्द्र भक्ति
7.15 से 7.45	छात्र प्रवचन
7.45 से 8.30	डॉ. भारिल्ल का प्रवचन : समयसार- सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर
8.30 से 9.15	कक्षायें
	(1) समयसार - पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील
	(2) इष्टोपदेश - पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री
	(3) भक्तामर स्तोत्र - पण्डित सोनूजी शास्त्री

नोट - जो भी साधर्मी यहाँ रहकर इन कार्यक्रमों का लाभ लेना चाहते हैं, वे कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127